thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 39 23 से 29 अक्टूबर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 का. कृ.-15

उत्तर प्रदेश के ग्राम –दाहा (चौगामा) बागपत में विशाल पर्यावरण रक्षा यज्ञ का किया गया भव्य आयोजन

पर्यावरण प्रदूषण से बचने का एक मात्र उपाय यज्ञ

– स्वामी आर्यवेश

उत्तर प्रदेश के ग्राम –दाहा (चौगामा) बागपत में विशाल पर्यावरण रक्षा यज्ञ के अवसर पर जन–समूह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

ग्राम दाहा (चौगामा) बागपत (उ. प्र.) में एक विशाल पर्यावरण रक्षा यज्ञ का आयोजन वीतराग संन्यासी स्वामी विवेकानन्द सरस्वती गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्रह्मत्व में विशाल स्तर पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डॉ. चन्द्रवीर सिंह जी थे। इस अवसर पर सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बागपत, गाजियाबाद तथा शामली आदि 6 जिलों के लगभग 4 हजार लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. चन्द्रवीर सिंह सरकारी नौकरी से अवकाश प्राप्त होने के पश्चात् भूगर्भ में प्रदूषित हो रहे पानी को लेकर जबरदस्त अभियान छेड़े हुए हैं। वे चाहते हैं कि समय रहते सरकार ने ठोस कदम नहीं उठाये तथा भयंकर रूप से प्रदूषित हो चुके पानी को शुद्ध करने के उपाय नहीं खोजे गये तो विशेषकर इन इलाकों की जनता को पीने के पानी के लिए भीषण संकट का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने सरकार के विशिष्ट विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों आदि की टीम बुलाकर इन समस्त जिलों के जल का परीक्षण करवाया है जिसमें यह पाया गया कि यदि प्रदूषण इसी प्रकार बढ़ता रहा तो न केवल वनस्पति, खाद्यान्न में प्रदूषित तत्त्व समा जायेंगे बल्कि मवेशी तथा मनुष्यों को भी जान के लाले पड़ जायेंगे। उन्होंने बताया कि समीप के गाँव में 100 लोग कैंसर से मर गये हैं तथा 12 लोग कैंसर से तड़प रहे हैं। इसके अतिरिक्त सैकड़ों पशु भी मर गये हैं। उन्होंने जनसभा को एक बोतल में भरे प्रदूषित जल का सेंपल भी दिखाया। इस अवसर पर डॉ. चन्द्रवीर जी के विशेष आग्रह पर स्वामी आर्यवेश जी विशेष रूप से यज्ञ में उपस्थित हुए। उन्होंने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए बताया कि जब तक गाँव में तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों में बड़े-बड़े यज्ञों का प्रारम्भ नहीं किया जायेगा तब तक बादल तथा बादल से होने वाली वर्षा के जहरीले तत्वों से नहीं बचा जा सकता है। उन्होंने रूस का उदाहरण देते हुए बताया कि वहाँ पर विशेष प्रयोगों से जहरीले पानी की वर्षा करवाई गई। जिसके कारण उसका दुष्परिणाम काफी भयावह था। लोगों के अंग भंग हो गये। लोग बीमार हो गये। उन्होंने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण से बचने का एकमात्र उपाय यज्ञ ही है। उन्होंने आम जनता से अपील की कि अपने-अपने क्षेत्रों में बड़े-बड़े यज्ञ करवाने की योजना बनायें जिससे प्रदूषण को दूर करने में किसी हद तक सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने डॉ. चन्द्रवीर जी के प्रयासों की प्रसंसा करते हुए उन्हें हर प्रकार का सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर डॉ. सोमपाल शास्त्री ने ऋग्वेद के मन्त्र ***अग्निमीडे पुरोहितं*** को उधृत करके यह बताया कि कैसे परमपिता परमात्मा ने वेद में पर्यावरण रक्षा के प्रभावी उपाय बताये हैं। श्री सोमपाल जी ने विभिन्न मन्त्रों के द्वारा यज्ञों से पर्यावरण को सुधारने के प्रभावी उपाय बताये। इस अवसर पर स्वामी यज्ञमुनी, आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, विधायक वीरपाल राठी, श्री ओमपाल सिंह नेहरा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। यज्ञ के ब्रह्मा तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती ने आह्वान किया कि जब तक भारी संख्या में चल रहे उद्योगों से निकलने वाले विशाक्त जल की रोकथाम नहीं की जायेगी तब तक इस समस्या से बचना अत्यन्त कठिन है।

उन्होंने कहा कि संगठित होकर हम सब इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर काम करें। यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि जब तक भारत में यज्ञ परम्परा रही इस प्रकार की समस्यायें नहीं आती थी। और जब से हमने यज्ञीय परम्परा को छोड़ दिया है हम विभिन्न समस्याओं से निरन्तर जूझ रहे हैं। डॉ. चन्द्रवीर जी ने अपनी भावी योजना का विस्तृत वर्णन देते हुए घोषणा की कि इस अभियान के लिए किसी भी प्रकार का धन संग्रह नहीं किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर करके इस समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जायेगा। इस महत्त्वपूर्ण आयोजन की व्यवस्था का सारा उत्तरदायित्व डॉ. चन्द्रवीर जी ने उठाया। यज्ञ से पर्यावरण को जोड़कर यह कार्यक्रम अद्भुत था। तथा विशाल जनसमूह एवं जन सामान्य से जुड़ा मुद्दा उठाकर जन भावनाओं को यज्ञ से जोड़ने के लिए डॉ. चन्द्रवीर जी साधुवाद के पात्र हैं।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

31 अक्टूबर जयन्ती पर विशेष

लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल

1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ। अखण्ड भारत दो टुकड़ों में बंट गया, भारत और पाकिस्तान बचे-खुचे भारत की भी स्थिति बहुत अच्छी न थी। देश छोटी-छोटी रियासतों व रजवाड़ों में बंटा हुआ था। इन सबकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता और अपनी-अपनी महत्वाकांक्षायें थीं। आज स्थिति वैसी नहीं है। राजशाही व रियासतों की समाप्ति हो चुकी है।

आज के भारत की तुलना 1947 के भारत से करें। कहां रियासतों में बंटा निर्बल भारत और कहाँ विश्व के सबसे बड़े गणतंत्र के रूप में सुस्थापित संगठित भारत। इस तुलना के बाद श्रेय देने की बात आती है। यदि किसी एक व्यक्ति को भारत को संगठित करने का श्रेय दें तो वह व्यक्ति होंगे भारत के पहले गृहमंत्री, लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल।

सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म गुजरात के बोरसद तालुके के करमसद नामक गांव में 31 अक्टूबर 1875 को हुआ था। सरदार पटेल अपने माता-पिता की चौथी सन्तान थे। उनके पिता झवेर भाई एक कृषक थे। सरदार पटेल ने कृषकों की दयनीय स्थिति को केवल देखा नहीं था, बल्कि उसे खूब अच्छी तरह सहन किया था। उनका मत था कि परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़े बिना भारतीय किसानों की स्थिति को सुधारा नहीं जा सकता। सन् 1921 में सरदार पटेल बारहोली के किसान सत्याग्रह के कारण राष्ट्र भर में चर्चा में आ गये। लगान बढ़ाने के विरोध में उन्होंने किसानों का ऐसा नेतृत्व किया कि 'बापू' ने उन्हें 'सरदार' की सम्मानित उपाधि प्रदान की। आज जिस सन्दर्भ में सरदार पटेल सर्वाधिक प्रासंगिक हैं, वह है- राजनैतिक इच्छा शक्ति व पंगु सरकारों के चलते भारत के पुनः खंड-खंड होने की समस्या। आज पृथकतावादी आन्दोलनों ने भारत की अखंडता के लिए संकटपूर्ण स्थिति उत्पन्न कर रखी है। इन आंदोलनों में प्रमुख है- बोड़ो आन्दोलन, नक्सली आन्दोलन तथा कश्मीर का पृथकतावादी आन्दोलन। इनमें सबसे भयावह आन्दोलन है- पाकिस्तान की धरती से संचालित हो रहा कश्मीर का पृथकतावादी आन्दोलन। इस आन्दोलन की जड़ में जाकर जब हम देखते हैं तो पाते हैं कि यदि 1947 में ही कश्मीर का प्रभार सरदार पटेल के पास होता तो यह स्थिति उत्पन्न न होती।

अन्य कुछ रियासतों की तरह कश्मीर के महाराजा हरि सिंह भी नहीं चाहते थे कि कश्मीर भारत में मिले। सरदार की कूटनीति के कारण अन्य ऐसे राजा तो भारत में मिल गये परन्तु कश्मीर के महाराजा भारत में विलय स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। स्वतंत्रता के समय रियासतों के एकीकरण के लिए जो सूत्र तैयार किया गया था, उसके अनुसार कश्मीर को भारत व पाकिस्तान में से किसी एक में मिल जाना चाहिए था, परन्तु कश्मीर में महाराजा इस सूत्र को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे। वे न भारत के साथ विलय चाहते थे और न पाकिस्तान के साथ। वे अपनी स्वतंत्र प्रभु सत्ता चाहते थे, जबकि कश्मीर की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण ऐसा होना न तो उचित था तथा न ही सम्भव। उधर पाकिस्तान, कश्मीर पर दृष्टि गड़ाये बैठा था। अतः 20 अक्टूबर, 1947 के दिन कबायलियों के वेश में पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर में घुस गये और लूटपाट, मारकाट शुरू कर दी। अब महाराजा हरि सिंह घबराये। वे अपने समस्त परिवार तथा सामान सहित श्रीनगर से जम्मू आ गये। 26 अक्टूबर 1947 को उन्होंने उसी प्रकार के सम्मिलित समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये, जिस पर अन्य राज्यों ने किये थे। किन्तु नेहरू जी ने तब भी कश्मीर का मामला सरदार पटेल के रियासती विभाग को नहीं दिया।

अतएव भारत सरकार ने कश्मीर की रक्षा के लिए विमानों द्वारा सेना भेजी, जिसने लुटेरों को पीछे भगा दिया। सरदार पटेल की असहमति व विरोध के बाद भी नेहरू जी ने पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में हस्तक्षेप करने की शिकायत संयुक्त राष्ट्र संघ में कर दी। जबकि उससे कोई लाभ नहीं हुआ, उल्टे क्षति उठानी पड़ी, क्योंकि संयुक्त

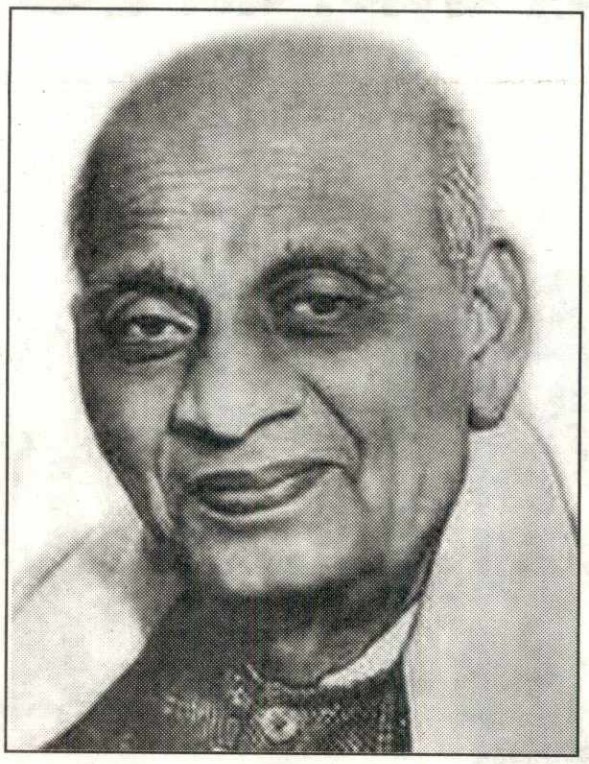

राष्ट्र सुरक्षा परिषद में ब्रिटेन तथा अमेरिका ने पाकिस्तान का पक्ष लिया। इन देशों में पाकिस्तान को आक्रमणकारी नहीं माना, बल्कि भारत से कहा कि वह पाकिस्तान के साथ समझौता कर ले। यह विषय ऐसा उलझा कि अभी तक नियंत्रण में नहीं आ रहा। 18 नवम्बर, 1947 को कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के सम्मान में, कश्मीर सरकार ने कला भवन में एक भोज दिया। सरदार पटेल भी इस भोज में सम्मिलित हुए। उन्होंने तत्कालीन कश्मीर के प्रमुख नेताओं में से एक बख्शी गुलाम मुहम्मद से कश्मीर के भविष्य के सम्बन्ध में वार्ता की। कश्मीर में कश्मीर संविधान परिषद का गठन किया गया। तत्पश्चात् 14 नवम्बर, 1952 को कश्मीर संविधान परिषद ने डॉ. कर्ण सिंह को अपना सदरे रियासत (राज्यपाल) चुना। भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 15 नवम्बर, 1952 को उनके पदासीन होने की स्वीकृति दे दी। 9 अगस्त, 1953 को बख्शी गुलाम मुहम्मद कश्मीर के मुख्यमंत्री बनाये गये। कश्मीर संविधान परिषद ने 1956 में सर्वसम्मति से यह निर्णय किया कि कश्मीर, भारत का अभिन्न अंग होगा। 27 जनवरी, 1957 से कश्मीरी संविधान कश्मीर पर लागू हो गया। सरदार पटेल का सुझाव था कि कश्मीर की विशेष स्थिति को समाप्त करके उसे भारत में पूर्णतया मिलाकर वहाँ शरणार्थियों को बसाया जाये और वहाँ बसने की अन्य भारतवासियों पर जो रोक लगी हुई है, उसे हटाया जाये। यदि ऐसा हो जाता तो कश्मीर, विकास के रास्ते पर आगे बढ़ता। शेष भारत की तरह वहाँ भी नये-नये विकास कार्य होते और जनता समृद्ध होती। परन्तु कश्मीर की विशेष स्थिति के कारण न तो कश्मीर का विकास हो पा रहा है और न ही वहाँ की जनता की स्थिति सुधर पा रही है। आर्थिक स्थिति संतोषजनक न होने के कारण वहाँ के नवयुवक सरलता से पाकिस्तान के बहकावे में आ जाते हैं। यही कारण है कि कश्मीर का आतंकवाद समाप्त नहीं हो पा रहा है।

भारत सरकार को आतंकवादियों तक से बातचीत करनी पड़ रही है, भारतीय संविधान तक को वार्ता के दायरे से बाहर रखना पड़ रहा है। इसके बाद भी वार्ता नहीं हो पाती। आतंकवादी और उनके समर्थक दोनों मुँह से वार्ता करने के पक्षधर हैं और हाथों से वार करते रहने के। भारत सरकार भी वार्ता की पक्षधर है, कश्मीर में शांति लाने के लिए, लेकिन यह एक निश्चित तथ्य है कि सरदार पटेल के मार्ग का अनुसरण किये बिना शांति स्थापित नहीं हो सकती। कश्मीर को भी भारत के शेष राज्यों की भांति ही माना जाना चाहिए। अनुदान का लड्डू खिलाने की जगह वहाँ के लोगों को आत्मनिर्भर बनाने की व्यवस्था करनी चाहिए। धारा 370 के चलते वहाँ अन्य भारतीय कुछ सक्रिय प्रयास कर ही नहीं सकते और कश्मीरी समुदाय टुकड़ों में बंटा हुआ है। हिन्दू कश्मीरी कश्मीर छोड़ चुके हैं और शेष कश्मीर, मजहबी उन्माद से पीड़ित हैं। आम आदमी चैन से रोजी-रोटी कमाना चाहता है, जबकि आतंकवादी उन्हें चैन से जीने देना नहीं चाहते। वह असमंजस में है कि भारतीय सैनिकों का साथ दें या आतंकवादियों की सुनें। कश्मीर सरकार का कोई विशेष प्रभाव दिखाई नहीं देता। यदि भारतीय सैनिक कश्मीर में न हो तो कश्मीर सरकार, कश्मीर का शासन नहीं चला पायेगी। सरदार पटेल का कहना था- यदि कश्मीर का मामला उनके निर्देशन में हल किया जाये तो उसका निर्णय 15 दिन में हो सकता है।

अब न तो सरदार पटेल हैं और न ही उनकी वैचारिक दृढ़ता का कुछ अंश कहीं दिखाई दे रहा है। आज उनके विचारों पर ध्यानपूर्वक चिन्तन, मनन और आचरण करने की आवश्यकता है, आखिर भारत की अखंडता की रक्षा का दायित्व तो भारत सरकार का ही है।

आर्य समाज बांगरमऊ के तत्वावधान में

43 वाँ वार्षिकोत्सव

12 नवम्बर (बुधवार) से 16 नवम्बर (रविवार) 2014 तक

इस अवसर पर चतुर्वेद शतकम् पारायण महायज्ञ, आध्यात्मिक सत्संग एवं विराट वैदिक पुस्तक मेला के साथ-साथ नशामुक्ति अभियान के अन्तर्गत गुटखा, तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट व शराब आदि दुर्व्यसनों से मुक्ति दिलाने हेतु निःशुल्क परामर्श व दवा वितरण का भव्य आयोजन किया गया है।

आप सपरिवार, इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

सत्संग स्थल : जी. पी. पैलेस गेस्ट हाऊस, संडीला रोड, बांगरमऊ (उ. प्र.)

- दिनेश कुमार आर्य-मंत्री, मो.:-9936607123

आर्य समाज मंदिर मण्डी (हिमाचल प्रदेश) का

85वाँ वार्षिकोत्सव एवं गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज मण्डी (हि. प्र.) का 85वाँ वार्षिक महोत्सव एवं गायत्री महायज्ञ का आयोजन दिनांक 30 अक्टूबर, 2014 से 2 नवम्बर, 2014 तक बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य अनुज शास्त्री जी तथा श्री प्रताप सिंह आर्य भजनोपदेशक के प्रवचन व भजन होंगे।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर सपरिवार व इस्ट मित्रों सहित कार्यक्रमानुसार आर्य समाज भवन मण्डी (हि. प्र.) में पधारकर इस उत्सव को सफल बनाने में अपना सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

- देवी चन्द्र कपूर-मंत्री

वैदिक विधि विधान से अथर्ववेद ब्रह्म पारायण यज्ञ सम्पन्न

स्थानीय गोबिन्दपुरी रामनगर (सोडाला) में तीन दिवसीय अथर्ववेद ब्रह्म पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति रविवार 28 सितम्बर, 2014 को हुई। डॉ. रामपाल विद्याभास्कर के ब्रह्मत्व में वेद पाठ पं. भगवान सहाय विद्या वाचस्पति, डॉ. सन्दीपन आर्य एवं श्रीमती श्रुति शास्त्री द्वारा हुआ। आयोजन के प्रत्येक सत्र में मधुरता का संचार हुआ बिजनौर (उ. प्र.) के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री टीकम सिंह आर्य के भजनों से।

विशेष उल्लेखनीय है कि गोबिन्दपुरी बस्ती में आर्य समाज की पहुँच नहीं है, फिर भी निवासियों ने वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति श्रद्धा एवं अपूर्व उत्साह दिखाया जिसके श्रेय के पात्र हैं अजमेर डी. ए. वी. संस्था के पूर्व प्रो. डॉ. कृष्णपाल सिंह। डॉ. कृष्णपाल सिंह के अथक प्रयासों से यह गोबिन्दपुरी में चौथा पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ. कृष्णपाल सिंह से कन्धे से कन्धा मिलाया उत्साही कर्मठ श्री रघुनन्दन बंसल तथा राजेन्द्र आर्य ने समारोह का समापन ऋषि लंगर के साथ हुआ।

- प्र. ईश्वर दयाल माथुर

thearyasamaj.org

मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा कितना सच! कितना झूठ!!

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

शंकराचार्य और शिरडी-साईं के विवाद को लेकर इन दिनों विविध टी. वी. चैनलों पर विविध धर्माचार्यों के बीच संवाद बहस और शास्त्रार्थ चल रहा है जिसे आम दर्शक व श्रोता बड़े ही ध्यान से देख रहा है, सुन रहा है। इसी वाद-विवाद में मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा होने अथवा न होने का मुद्दा भी उभर कर सामने आया है। एक पक्ष का मानना है कि वैदिक मन्त्रों अथवा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है जिससे मूर्ति सजीव होकर आराधक की प्रार्थना सुनती व फल देती है। दूसरा पक्ष इसे पाखण्ड मानता है जिस पर उसके अपने तर्क व प्रश्न हैं, शंकाएं व जिज्ञासाएँ हैं तथापि इस विषय पर पौराणिकों व साईं भक्तों में कोई मतभेद नहीं है क्योंकि दोनों प्राण-प्रतिष्ठा का औचित्य स्वीकार करते हैं और ये दोनों ही पक्ष प्राण-प्रतिष्ठा के साथ देवी-देवता या साईं की प्रतिमा मन्दिरों में स्थापित कर रहे हैं। इस विषय में विवाद केवल इतना है कि प्राण-प्रतिष्ठा अवतारों की मूर्तियों में ही सम्भव है, हर साधु-संत में नहीं। एक पक्ष शिरडी-साईं को अवतार नहीं मानता अत: उनकी मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा को भी शास्त्रोक्त नहीं स्वीकारता निरा ढोंग मानता है। मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा हो सकती है अथवा नहीं, इसमें कितना सच है और कितना झूठ है इसी को लेकर यहाँ चर्चा करना अभिप्रेत है। प्राण-प्रतिष्ठा से तात्पर्य क्या है यह भी स्पष्ट नहीं है क्योंकि प्राण शब्द अनेकार्थी है जिसके कई अर्थ हैं - वायु, आहार, सूर्य-किरणें, अग्नि, ज्योति, आत्मा, परमात्मा। प्राण-प्रतिष्ठा में किस अर्थ का प्रयोजन अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं है। अस्पष्टता का कारण यह है कि मूर्ति खुद में ठोस निष्चेष्ट, अचेतन, निर्जीव, भौतिक पदार्थ है जो न तो वायु, आहार, सूर्य किरणों को ग्रहण कर सकती है और न ही आत्मा और परमात्मा को। अत: प्राण प्रतिष्ठा शब्द खुद में सन्देह पैदा करने का आधार बनता है। जहाँ सन्देह की सम्भावना पैदा होती है वहाँ विषय झूठ व सच के बीच में उलझ जाता है। वस्तुत: यह विषय स्वयं में इतना विवादास्पद है कि स्वत: ही इसमें से अनेक शंकाएं पैदा होने लगती हैं और व्यक्ति अन्तत: इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करना निरा ढोंग है, पाखण्ड है, आडम्बर है, अंधविश्वास है जिसके पीछे न अध्यात्म है, न वेदादि शास्त्रों की कोई मान्यता है बल्कि केवल चतुराई और व्यावसायिक बुद्धि काम कर रही है जिससे कि लोगों की आस्था, श्रद्धा और विश्वास का अधिक से अधिक दोहन किया जा सके। कुछ प्रतिष्ठित मन्दिरों के प्रति लोगों का जो आकर्षण है अधिकांशत: उसका श्रेय मन्दिर की भव्यता, वहाँ जुटने वाली भीड़, वहाँ चढ़ने वाले चढ़ावे कतिपय उड़ायी गई किंवदंतियों व दंतकथाओं तथा प्राचारतन्त्र को जाता है। न कि देवी-देवता की मूर्ति को। जहां लाख भक्त जायेंगे वहाँ कुछेक की मन्नतें कबूल होती हैं, फल देती हैं तो इसका श्रेय मूर्ति को कैसे दे दिया जा सकता है?क्या यह सम्भव नहीं कि परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था के अन्तर्गत ऐसा हुआ हो?मूर्ति में ही यदि शक्ति होती तो मन्नतें सबकी पूरी होतीं, लेकिन ऐसा होता नहीं है। यदि निष्पक्ष सर्वे कराया जाये तो पता चलेगा कि पांच प्रतिशत लोगों की भी मनोकामनाएँ इन मन्दिरों में पूरी नहीं होतीं। समाचार पत्रों में आये दिन समाचार प्रकाशित होते रहते हैं कि अमुक भक्त ने वर्षों तपस्या की, मूर्ति के आगे नाक रगड़ी लेकिन उसे मिला कुछ नहीं और अन्तत: निराश होकर उसने मूर्ति के समक्ष ही आत्म हत्या कर मोक्ष पाने का प्रयास किया।

प्राण का अर्थ

प्राण उस विश्वव्यापनी शक्ति का नाम है, जो संसार की ऊर्जा का मूल, प्रमुख और अक्षय स्रोत है। यह प्राण शक्ति न हो तो संसार में गति, विकास, उत्थान सम्भव नहीं है। ऊर्जा ही प्रत्यक्षत: प्राण है। इसके बिना किसी भी जीवधारी प्राणी का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास सम्भव नहीं। मानव साधना (प्राणायाम) द्वारा जो, सिद्धियाँ प्राप्त करता है वह प्राण के फलस्वरूप ही प्राप्त करता है। वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मणग्रन्थों में प्राण पर विशद् चर्चा उपलब्ध है। अथर्ववेद का 26 मन्त्रों का पूरा सूक्त (11.4) प्राण से सम्बद्ध है। इसमें कहा गया है - प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् (अथर्व. 11.4.15), प्राणो ह सर्वेस्येश्वर (अथर्व. 11.4.10) अर्थात् प्राण ही सांसारिक शक्ति का आधार है, नियामक है। प्राण अग्नि: (शतपथ ब्राह्मण 6.31.21), प्राणों वै विश्वज्योति (शत. 7.4.2.28) प्राण अग्नि है जो दोषों को नष्ट करती है, प्राण विश्वज्योति है जो संसार में चेतना की ज्योति जलाता है। प्राणा वाव रुद्रा:। एते हीदं सर्वं रोदयन्ति (छान्दोग्य उप. 3.16.3) प्राण रुद्र देवता है जिसके जाते ही शरीर निश्चेष्ट, मर जाता है और सभी को वह रुला देता है।

प्राण के पांच भेद हैं - प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान। इसी प्रकार उप-प्राण के भी पांच भेद हैं - नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय। प्राण का स्थान हृदय है जो कंठ से डायफ्रम तक के क्षेत्र को प्रभावित करता है, श्वसन-संस्थान, हृदय, ग्रास नली, फेफड़ों को शुद्ध, पुष्ट, सशक्त करता है। अपान का कार्यक्षेत्र नाभि से गुदाद्वार तक है जिसका मुख्य स्थान मलद्वार है। बड़ी आंत और मल-मूत्र विसर्जन प्रणाली को संचालित करता है। समान का मुख्य स्थान नाभि है जो पाचन तंत्र से सम्बद्ध वायु है। डायफ्रम से नाभि तक पाचन-संस्थान, उदर, यकृत, गुर्दे, अग्न्याशय व छोटी आंत का संचालन समान प्राण करते हैं। उदान का स्थान कण्ठ है जो मस्तिष्क, आँख, नाक, कान, स्वरयंत्र, वाणी का संचालन करता है, मनोबल व स्मरण शक्ति बढ़ाता है। व्यान समूचे शरीर में व्याप्त जीवनी शक्ति है, पूर्वोक्त चारों प्राणों में सामंजस्य स्थापित करता है, नाड़ी संस्थान, रक्त संचार और मांसपेशियों का संचालन करता है, त्वचा तक में यही व्याप्त है। नाग उप-प्राण के कारण छींक, डकार, खांसी आदि आती है जिससे शरीर की शुद्धि होती है, रोग का पता लगता है। कूर्म उप-प्राण नेत्रों से सम्बन्धित है, इसी से नेत्रों के पलक खुलते-बंद होते हैं। कृकल से भूख-प्यास लगती है। देवदत्त से निद्रा-तन्द्रा आती है, इसी से जंभाई आती है। धनंजय से शरीर का पोषण और मृत्यु पश्चात शरीर का विघटन इसी से होता है। शरीर में शोध अर्थात् सूजन, टयूमर भी इसी से होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मानव शरीर अथवा जीवधारी शरीर की प्रत्येक चेष्टा व गति का आधार प्राण है। यह प्राण शक्ति हमें वायु से, सूर्य से एवं भोजन से प्राप्त होती है। प्राण के आगमन से जीवन का शुभारम्भ और निर्गमन से अंत होता है।

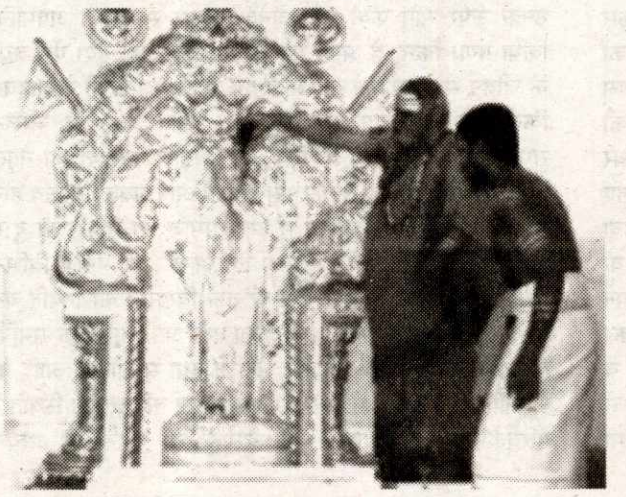

प्राण की यह विस्तृत विवेचना यहाँ इस प्रयोजन से की गई है कि मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करने का जो दावा किया जाता है उसमें कितना दम है यह देखा जा सके। मानव शरीर को नौ संघटकों में विभाजित किया जाता है जैसे - (1) अस्थि संस्थान, (2) मांसपेशी संस्थान, (3) पाचन संस्थान, (4) श्वसन संस्थान, (5) रक्त संचार संस्थान, (6) विसर्जन संस्थान, (7) रसग्रन्थि संस्थान, (8) प्रजनन संस्थान और (9) स्नायु (नाड़ी) संस्थान। लगभग इन सभी संस्थानों में प्राण का गमन और शोधन कार्य होता है। यहां सवाल उठता है कि जब पाषाण, धातु, लकड़ी, कागज की जड़ मूर्तियों में ये संस्थान होते ही नहीं हैं तो किस प्रयोजन व औचित्य से इनमें प्राणों की स्थापना की जाती है और कैसे मूर्ति उन प्राणों को ग्रहण अथवा स्वीकार करेगी?प्राण-प्रतिष्ठा से पूर्व और पश्चात की स्थिति में जब मूर्ति मे कोई परिवर्तन आता ही नहीं तो कैसे माना जाये कि प्राण-प्रतिष्ठा का कोई औचित्य है?प्राण-प्रतिष्ठा शरीर में मन्त्रों से नहीं वायु, सूर्य, भोजन से होती है तो वह मूर्तियों में इनसे भिन्न मन्त्रोच्चारण से कैसे हो सकती हैं?ऊपर पांच प्राणों व पांच उप-प्राणों का उल्लेख हुआ है, उनके मुख्य स्थान व कार्य का उल्लेख हुआ है। मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा करते समय कौन-सा प्राण तथा उप-प्राण प्रविष्ट होता है?यदि होता है तो अपना लक्षण प्रकट क्यों नहीं करता?प्राण-प्रतिष्ठा के वाद भी मूर्ति में यदि चेतना, हलचल दिखाई नहीं देती तो उसे सिवाय पाखण्ड, अंधविश्वास और झूठे प्रचार तन्त्र के क्या माना जा सकता है?ऋषि दयानन्द इसी कारण प्राण-प्रतिष्ठा पर सवाल उठाते हैं कि यदि प्राण-प्रतिष्ठा मे दम है तो उसके अपने प्रियजनों के मृत शरीर में प्राण फूंक कर क्यों नहीं जिला लिया जाता?

प्राण प्रतिष्ठा निर्जीव में नहीं सजीव में

प्राण निर्जीव अथवा जड़ पदार्थ मे स्थापित अथवा प्रतिष्ठित नहीं होते अपितु सजीव में अर्थात् जल-चर, थल-चर, नभ-चर प्राणियों में और वनस्पति-वृक्ष, पौधों, झाड़ियों, घास (जिनमें आत्मा प्रसुप्त अवस्था में रहता है) में संचारित होते हैं। जिस शरीर में आत्मा नहीं है वहां प्राण अपनी मूल भूमिका में नहीं रहते। मृत शरीर में कई बार वायु प्रवेश होने से वह खड़ा हो जाता है, चलने भी लगता है इसलिए मृत शरीर के नाक व कानों में रूई ठूंस दी जाती है जिससे वायु शरीर में प्रवेश न कर सके। इस स्थिति में शरीर में हलचल तो आ जाती है वह खड़ा होकर डोलने भी लगता है, लेकिन उसमें चेतना नहीं आती। शरीर को इस विलक्षण स्थिति में पाकर कई लोग दहशत खाते भी देखे गये हैं लेकिन जब मृत शरीर के पेट को दवा कर वायु बाहर निकाल दी जाती है तो वह अपनी पूर्व स्थिति में आ जाता है। जाहिर है कि आत्मा और प्राण में गहरा सम्बन्ध हैं। मूर्तियाँ चूंकि निर्जीव होती हैं, उनमें आत्मा नहीं होती अत: उनमें प्राणों की स्थापना या प्रतिष्ठा हो ही नहीं सकती।

आत्मा को किस शरीर में भेजना है किस शरीर से निकालना है यह पूरी व्यवस्था परमात्मा के आधीन है। अत: परमात्मा की व्यवस्था में हस्तक्षेप करना मनुष्य के लिए न तो सम्भव है और न ही शोभनीय है। मन्त्रोच्चारण और शास्त्रोक्त विधि का प्रदर्शन कर हम मात्र लोगों को भ्रम में डालते हैं, उनमें अन्धविश्वास पैदा करते हैं। इस ढोंग से मूर्ति में जब सर्वप्रथम आत्मा की ही स्थापना नहीं की जाती तो उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा का औचित्य कैसे सिद्ध किया जा सकता है?सोमनाथ मन्दिर में चुम्बक के सहारे मूर्ति को अधर में लटकाया गया था अत: अंध भक्त उसमें असीम श्रद्धा और विश्वास रखने लगे थे लेकिन जब मुस्लिम आक्रान्ताओं ने मन्दिर का गुम्बद तोड़ा, चुम्बक पत्थर नीचे गिरा, तो मूर्ति भी धराशायी हो गई। ऋषिवर दयानन्द ने हुक्का पीने वाले एक देवता की पोल भी सत्यार्थ प्रकाश में खोली है। कुछ वर्ष पूर्व शिव परिवार को दूध पिलाने का पाखण्ड पूरे भारत में फैलाया गया लेकिन जब वैज्ञानिकों ने इसकी पोल खोली तो पाखण्डियों को मूँह छिपाने को जगह नहीं मिली।

इन घटनाओं के बावजूद भी मूर्तिपूजा के संचालक अपनी हरकतों से बाज नहीं आते और मूर्तिपूजा के समर्थन में किसी न किसी टोटके को भुनाने लगते हैं। मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा करना भी एक ऐसा ही टोटका है जिसे बृहद् स्तर पर भुनाया जा रहा है। धर्म के मामले में जितनी अज्ञानता, अन्धविश्वास, भेड़चाल भारत में है अन्यत्र कहीं नहीं है। आस्था, श्रद्धा, विश्वास का जितना घटिया स्तर यहाँ है, अन्यत्र मिलना कठिन है। धर्म का तात्पर्य अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान से है, पंच महायज्ञों ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ जैसे धर्मानुष्ठानों से है, पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से आवेष्टित जीवन शैली से है और इनमें कहीं भी मूर्ति पूजा का स्थान नहीं है, विधान नहीं है, औचित्य नहीं है फिर भी धर्म के नाम पर इसे अपनाया जा रहा है। चूंकि मूर्तिपूजा का कोई वैदिक अथवा शास्त्रीय आधार नहीं है इसलिए इसे टोटकों के बल पर जीवित रखा जा रहा है, अन्धविश्वास के सहारे चलाया जा रहा है। लोगों की श्रद्धा, संवेदना से खिलवाड़ किया जा रहा है। भारत में मूर्तिपूजा का इतिहास दो-ढाई हजार वर्ष से अधिक पुराना नहीं है, यूनानी इसे भारत में लाये, जिनसे जैनियों व बौद्धों ने इसे ग्रहण किया, फिर पौराणिकों ने इसे अपनाया। लेकिन ढाई हजार साल के संस्कारों को मिटाना भी उस समय कठिन हो जाता है जब धर्म को अध्यात्म का नहीं व्यवसाय का आधार बना लिया गया हो, परमार्थ का नहीं स्वार्थ का आधार बना लिया गया हो, आत्म-शुद्धि का नहीं प्रतिस्पर्धा का औजार बना लिया गया हो, आमजन जब मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो, असंतुष्ट हो, दु:खी हो, हताश हो तब वह भगवान की शरण में जाने को तैयार होता है और उसे अपने निकट मन्दिर व मूर्ति ही दिखाई देते हैं जहाँ सर्वाधिक भीड़ जुटती है। कारण, मूर्तिपूजा को एक ऐसे अधिष्ठान के रूप में विकसित किया गया है, एक ऐसे शार्टकट रूट के रूप में विकसित किया गया है कि जाओ, मत्था टेको, प्रसाद चढ़ाओ सभी कामनाएँ पूरी हो जायेंगी भले ही हम चाहे कैसा ही निकृष्ट, अधार्मिक जीवन क्यों न जीते हों। यहाँ तो चोर और डकैत भी जब अपने मिशन पर निकलते हैं तो सर्वप्रथम अपने देवी-देवता के चरणों में सिर नवा कर निकलते हैं। धर्म, श्रद्धा, आस्था और अपराध का ऐसा घालमेल क्या अन्यत्र भी कहीं दिखाई देता है?धर्म चिन्तन और धर्माचरण की तो जैसे इस देश में अर्थी ही उठ गई है। कोई सोचने समझने को तैयार नहीं है, बस जिधर भीड़ अधिक है वहीं उनके लिए सन्मार्ग है, भले ही प्रसंग चाहे कुम्भ का हो, चाहे कांवड़ का हो, चाहे सूर्य या चन्द्र ग्रहण का हो। कहा जाता है मूर्तिपूजा धर्म का क, ख, ग सिखाने के लिएआवश्यक है लेकिन हकीकत यह है कि यह नदी में बहता कम्बल नहीं, रीछ है जिसकी पकड़ व जकड़ से जीवन भर छुटकारा नहीं मिलता। करपात्री और माधवाचार्य, शंकराचार्य और धर्माचार्य बूढ़े हो जाते हैं लेकिन उनसे मूर्तिपूजा नहीं छुटती। वे जीवन भर कवर्ग में ही पड़े रह जाते हैं चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग में नहीं पहुँच पाते। तब जन-साधारण के सुधरने की गारंटी कौन ले सकता है?जिन देवी-देवताओं को वर्षों से जेल रूपी मन्दिरों में कैद करके रखा गया हो, उन्हें पूजने वाले भला मूर्तियों से छुटकारा कैसे पा सकते हैं?

शेष अगले अंक

thearyasamaj.org

गुरुकुल लाढ़ौत - भैयापुर, जिला-रोहतक, हरियाणा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल भैय्यापुर लाढ़ौत, रोहतक का 23वां वार्षिकोत्सव दिनांक 19 अक्टूबर, 2014 को सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ गणमान्य व्यक्तियों के भाषण तथा नाटक आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

गुरुकुल लाढ़ौत, जिला-रोहतक में वार्षिकोत्सव के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में गुरुकुल शिक्षा को राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक बताते हुए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाने पर बल देते हुए आर्यजनों का आह्वान किया कि वे इस गुरुकुल के समर्पित तथा तपस्वी आचार्य हरिदत्त जी को आर्थिक बोझ से मुक्त कर दें तथा भरपूर सहयोग करें। स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि किस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने दोनों सुपुत्रों इन्द्र तथा हरिश्चन्द्र को पहला विद्यार्थी बनाकर गुरुकुल को प्रारम्भ किया था। उनके इस त्यागमयी उदाहरण को देखकर फिर अन्य लोगों ने अपने बच्चों को गुरुकुल में भेजना प्रारम्भ कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जालन्धर में बने अपने भव्य भवन को बेचकर गुरुकुल में भवन बनाने के लिए सम्पूर्ण राशि दान में दे दी और जनता जनार्दन को आश्वस्त किया कि वे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को वैदिक संस्कृति एवं संस्कारों के लिए सबसे उत्कृष्ट मानते हैं। और इसीलिए मैंने सर्वप्रथम अपने बच्चों को गुरुकुल में प्रवेश कराया और अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर गुरुकुल के भवन आदि बनाने में लगा दिये। उन्होंने कहा कि वे भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कृत-संकल्पित हैं। उनके इस आह्वान पर लोगों ने लाखों रुपये गुरुकुल में दान दिये। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल लाढ़ौत के संस्थापक श्री हरिदत्त जी को स्वामी श्रद्धानन्द जी के समकक्ष रखते हुए बताया कि श्री हरिदत्त जी ने अपनी पैतृक जमीन जो वर्तमान में करोड़ों रुपये की है उसे गुरुकुल के लिए दान देकर त्याग का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसे त्यागी, तपस्वी व्यक्ति के लिए हमें अपने समस्त फिजूलखर्ची को कम करके भारी धनराशि गुरुकुल को दान देनी चाहिए। जिससे गुरुकुल दिन दूनी रात चौगुनी गति से प्रतिष्ठित हो सके।

स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन की घटनाओं तथा आर्य समाज के मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को भावुक बना दिया। स्वामी जी ने बताया कि कैसे स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन को तिल-तिल कर जलाया। उन्हें अनेकों बार जहर के प्याले पीने पड़े। उनके ऊपर सांप फेंके गये। अनेकों प्रकार से उनको अपमानित किया गया। किन्तु वे अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। ऐसे ऋषि के जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। स्वामी जी ने आह्वान किया कि स्वतन्त्रता आन्दोलन की भांति देश की ज्वलन्त समस्याओं के समाधान के लिए आर्य समाज को देश का नेतृत्व करने की आवश्यकता है और इसके लिए आप सबको सक्रिय होना पड़ेगा। स्वामी जी ने वर्तमान में आर्य समाज की स्थिति पर दुःख और चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि आज आर्य समाज विभिन्न गुटों में बंटा हुआ है। नीचे से ऊपर तक बिखराव की स्थिति बनी हुई है। ऐसे में ऋषि भक्त आर्य जनता तथा आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ताओं, प्रचारकों, विद्वानों, नेताओं तथा संन्यासियों आदि को शीघ्रातिशीघ्र एकसूत्र में बंधकर आर्य समाज की वर्तमान स्थिति में परिवर्तन लाने तथा एक नया उत्साह पैदा करने की अत्यन्त आवश्यकता है। स्वामी जी ने समस्त घटकों के नेताओं एवं कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए कहा कि हम सब मिल-बैठकर आर्य समाज की संगठनात्मक स्थिति पर विचार करें क्योंकि कोर्ट-कचहरी में लाखों रुपये नष्ट करने के उपरान्त भी कोई हल निकलने की सम्भावना नजर नहीं आ रही है। स्वामी जी ने आर्य समाज की एकता का संकल्प दोहराते हुए स्पष्ट किया कि इस कार्य के लिए सभी प्रकार के प्रयत्न हम कर रहे हैं और साथ ही आर्यजनता का आह्वान भी करते हैं कि वे एकता के इस प्रयास में अपना सहयोग प्रदान करें। स्वामी जी के इस प्रस्ताव का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर दयानन्द आर्य एडवोकेट ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए आर्य समाज की दिशा व दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए स्वामी जी के नेतृत्व में पूरे आर्य समाज को संगठित होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की स्थापना युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के द्वारा की गई थी इसको आगे बढ़ाने में स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी तथा महात्मा हंसराज जैसे त्यागी, तपस्वी नेताओं ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। आज उस तेजस्वी संगठन को देखकर अत्यन्त दुःख होता है। लेकिन हम निराश नहीं हैं। और हमें आशा है कि स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज को उसी गौरवपूर्ण स्थिति में पहुँचाने में हम सफल होंगे।

इस अवसर पर युवा आर्य भजनोपदेशक श्री महेन्द्र सिंह आर्य ने ओजस्वी भजनों के द्वारा जनसमूह को मन्त्र मुग्ध कर दिया बहन दयावती आर्या ने ईश्वर भक्ति के सुन्दर भजन प्रस्तुत किये। समारोह में गुरुकुल के लिए आर्थिक सहयोग देने वालों को स्वामी आर्यवेश जी के द्वारा प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित करवाया गया। मंच का कुशल संचालन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. धर्मपाल जी-रोहतक ने किया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने इस अवसर पर एक विशेष नाटक के द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। आचार्य एवं संस्थापक श्री हरिदत्त जी ने सभी आभार व्यक्त करते हुए सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रीतिभोज के उपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज की समर्पित कार्यकर्ता बेटी बचाओ अभियान की मुख्य स्तम्भ
श्रीमती सुशीला आर्या का असामयिक निधन

आर्य समाज की समर्पित कार्यकर्ता व आर्य समाज के विशेष कार्यक्रम बेटी बचाओ अभियान की मुख्य स्तम्भ जुझारू व्यक्तित्व की धानी कुशल संगठनकर्ता व्यवहार कुशल एवं धर्मपरायणा श्रीमती सुशीला आर्या का 43 वर्ष की आयु में गत 13 अक्टूबर को असामयिक निधन हो गया। उनके दुःखद देहान्त से आर्य समाज के युवा निर्माण अभियान तथा बेटी बचाओ अभियान की अपूर्णीय क्षति हुई है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति करना नितान्त असम्भव है। स्व. श्री जयप्रकाश शास्त्री एवं आदरणीया बहन मूर्ति देवी (स्वामी इन्द्रवेश जी की बहन) की सुपुत्री श्रीमती सुशीला के निधन का समाचार सुनकर सैकड़ों माताएं, बहनें एवं परिवार के हितैषी लोग उनके निवास पर एकत्र हो गये तथा अश्रुपूर्ण भावों से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अपने मायके, ससुराल एवं संगठन में भी सुशीला जी का व्यवहार इतना प्रभावशाली था कि सभी लोग उनके व्यक्तित्व से आत्मीयता से जुड़े हुए थे। आर्य उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़ा बाजार रोहतक में अध्यापन का कार्य करते हुए सुशीला जी सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेती थीं। बहन पूनम तथा प्रवेश आर्या के बेटी बचाओ अभियान की वे विशेष स्तम्भ थीं। तथा प्रत्येक कार्यक्रम में पूरा समय देकर अपना कर्त्तव्य निभाती थी। इसके अतिरिक्त वे समय-समय पर हजारों रुपयों का सहयोग भी देती थीं। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त चुम्बकीय था। सैकड़ों कन्याओं तथा युवतियों को आर्य समाज से जोड़कर उन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया था। अपने पति डॉ. सत्यवीर सिंह सांगवान को घर की समस्त जिम्मेदारियों से मुक्त करके बच्चों की पढ़ाई, लालन-पालन का भार वे स्वयं निर्वहन करती थीं। उनकी एक मात्र सुपुत्री आकांक्षा जो 12वीं में पढ़ रही है तथा सुपुत्र अरमान को जो वात्सल्य उन्होंने दिया वह माताओं के लिए एक आदर्श उदाहरण है। अपनी माता श्रीमती मूर्तिदेवी का भी वे विशेष ध्यान रखती थीं अपने पिता श्री जय प्रकाश शास्त्री के देहावसान के पश्चात् माता मूर्तिदेवी को उन्होंने कभी भी अकेला नहीं छोड़ा। तथा अहर्निश सेवा तथा सुश्रुसा में लगी रहती थी। अपनी तीनों बहनों श्रीमती सुनीता, श्रीमती सुषमा एवं श्रीमती सुमन तथा तीनों बहनोई डॉ. रणवीर सिंह खासा, श्री बबरू भान अहलावत, श्री सत्येन्द्र कुमार एवं अपने एकमात्र छोटे भाई इंजीनियर सुशील देशवाल और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती श्वेता (रूस की निवासिनी) तथा इन सभी के बच्चों के प्रति जो स्नेह, आत्मीयता एवं प्रेम सुशीला जी का था वह सदैव स्मरण किया जायेगा। आज उनके जाने पर समस्त परिजन, सम्बन्धीगण तथा बेटी बचाओ अभियान, आर्य समाज तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के सदस्य एवं कार्यकर्ता उनके देहावसान से अत्यन्त दुःखी हैं। श्रीमती सुशीला जी की स्मृति में आयोजित 19 अक्टूबर को मध्यान्ह में तिलकनगर रोहतक स्थित उनके निवास स्थान पर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने उनके प्रति अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर मुख्य रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, हरियाणा सभा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, प्रिं. जगदेव सिंह, डॉ. श्यामदेव, बहन पूनम तथा प्रवेश आर्या, ब्र. दीक्षेन्द्र आदि के अतिरिक्त अनेकों अन्य गणमान्य महानुभावों ने दिवंगत के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी सद्गति तथा शोक-संतप्त परिजनों को इस महान दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। इस अवसर पर पारिवारिक जनों ने उनकी स्मृति में कई संस्थाओं को दानराशि भी प्रदान की।

thearyasamaj.org

आर्य समाज गन्नौर, जिला-सोनीपत के वार्षिकोत्सव पर स्वामी आर्यवेश जी का भावपूर्ण उद्‌बोधन

प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री जयदेव जतोई वालों के कर-कमलों एवं प्रयत्नों से निर्मित आर्य समाज गन्नौर के विशाल सभागार में 10 से 12 अक्टूबर तक वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य संजय याज्ञिक के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन विभिन्न यजमानों ने बड़ी श्रद्धा पूर्वक अपनी आहुति अर्पित की। 11 अक्टूबर को प्रात: 9 से 12 बजे तक चले कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष उद्‌बोधन हुआ जिसमें स्वामी जी ने उपस्थित जन-समूह को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ चतुष्टय की सरल व्याख्या करके अपने जीवन को शुभ कर्मों में लगाने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने बताया कि कर्मफल एवं पुनर्जन्म निश्चित है यह वेद की मान्यता है। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि लोग अपने कर्मों की ओर कभी भी विशेष ध्यान नहीं देते और अंधाधुंध काम, क्रोध, मद, लोभ आदि से ग्रस्त जीवन को पतन की

ओर ले जाने में लगे हैं। स्वामी जी ने बताया कि हमारे कर्म ही हमारे अगले जन्म का आधार बनेंगे। यदि हम शुभ कर्म करेंगे, अधिक मात्रा में करेंगे तो हमें मनुष्य का जीवन प्राप्त होगा और यदि बुरे कार्य करेंगे तो हमें मनुष्य जीवन से इतर अन्य योनियों में जीवन बिताना पड़ेगा। इस सच्चाई को समझकर हमें अपने कर्मों में सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए। स्वामी जी के अत्यन्त प्रभावशाली तथा भावपूर्ण प्रवचनों से प्रभावित होकर लोगों ने स्वामी जी को दुबारा आने का आमंत्रण दिया।

इस अवसर पर अनेंकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी को शॉल भेंटकर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, श्री संजय याज्ञिक, युवा आर्य भजनोपदेशक श्री दिनेश दत्त आर्य, आर्य समाज के प्रधान श्री प्रताप चन्द भूटानी, मंत्री श्री दिनेश आईना, श्री उमेश भूटानी, श्रीमती चन्द्रकान्ता आदि सम्मिलित थे। मंच का कुशल संचालन श्री ओम प्रकाश वर्मा जी ने किया। इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी को आर्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी ने विशेष आग्रह करके आमंत्रित किया था। क्योंकि स्वामी सच्चिदानन्द जी का जन्मस्थान भी गन्नौर ही है। उनकी उत्कट इच्छा थी कि श्री स्वामी जी इस कार्यक्रम में अवश्य पधारें। इस आर्य समाज के सभी कार्यकर्ता बड़े कर्मठ हैं तथा बड़े उत्साह के साथ कार्य करते हैं। उनकी कमर्ठता के कारण यह आयोजन अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्रीमती संतोष चौहान की श्रद्धांजलि सभा

सभी महिलाएँ बहन संतोष चौहान से प्रेरणा लें - स्वामी अग्निवेश

बहन संतोष चौहान का व्यक्तित्व हमें सदैव प्रेरणा देता रहेगा - स्वामी आर्यवेश

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के पूर्व रिसीवर आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान, आर्य समाज सैक्टर-22 के पूर्व मंत्री तथा प्रसिद्ध समाज सेवी श्री बलवीर सिंह चौहान की धर्मपत्नी श्रीमती संतोष चौहान का गत दिनों हृदय गति रूक जाने से निधन हो गया। वे 75 वर्ष की थी। श्रीमती संतोष चौहान की श्रद्धांजलि सभा गत 8 अक्टूबर को अपराह्न 3 से 4 बजे तक आर्य समाज सैक्टर-7 के विशाल सभागार में विश्वविख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस श्रद्धांजलि सभा में लगभग 1500 लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्रीमती संतोष चौहान को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बहन संतोष का व्यक्तित्व निराशा में आशा पैदा करने वाला था। वे सदैव उत्साह की बात किया

स्व. श्रीमती संतोष चौहान जी

करती थी। उनके मुख से कभी भी निराशा-हताशा की बात सुनने को कभी नहीं मिली। आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा विचारों से सर्वात्मना समर्पित बहन संतोष जी अपने पति श्री बलवीर सिंह चौहान के साथ सदैव आर्य समाज की स्थानीय, प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेती थीं। तथा हर प्रकार की गतिविधियों के लिए आर्थिक सहयोग भी अवश्यमेव प्रदान करती थी। उनके दो सुपुत्र श्री अश्विनी चौहान तथा अवनीश चौहान एवं उनकी सुपुत्री अर्चना भी उनके विचारों तथा संस्कारों से सदैव अनुप्राणित रहे। ऐसी बहन के देहावसान से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है उनका व्यक्तित्व हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा। इस अवसर पर डॉ. विक्रम कुमार विवेकी ने बहन संतोष को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हें एक आदर्श महिला की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि उनके जाने से आर्य समाज को गहरा आघात लगा है।

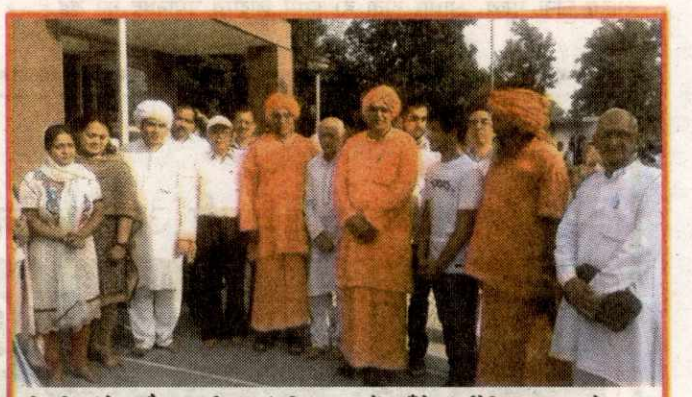

श्रीमती संतोष चौहान की श्रद्धांजलि सभा में पहुँचे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी वेदात्मवेश जी तथा अन्य महानुभाव शोक संतप्त परिवार के साथ।

विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जहाँ संतोष चौहान के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्हें अपनी स्वयं की बड़ी बहन की मृत्यु पर तथा माता जी की मृत्यु पर इतना कष्ट नहीं हुआ जितना बहन संतोष के देहावसान से दु:ख महसूस हुआ है। उन्होंने बताया कि बहन संतोष जी हमारे संगठन के क्रिया-कलापों का विशेष ध्यान रखती थीं तथा समय-समय पर गुप्त दान के रूप में विशेष सहयोग भी प्रदान करती रहती थीं। उन्होंने कहा कि संतोष जी का प्रतिवर्ष एक प्रस्ताव होता था कि स्वामी जी संगठन के लिए किसी भी वस्तु की आवश्यकता यदि आपको हो तो उसे नि:संकोच बताने की कृपा करें। स्वामी जी ने कहा कि वे उत्साही बहन थी तथा महिलाओं में विशेष रूप से जागृति पैदा करने के लिए हमेशा तत्पर रहती थी। कन्या भ्रूण हत्या, 2005 में आयोजित राष्ट्रीय जन-जागरण यात्रा का उन्होंने चण्डीगढ़ में भव्य स्वागत किया था। स्वामी जी ने इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह के समक्ष प्रस्ताव रखते हुए कहा कि आज की इतनी बड़ी संख्या में उपस्थिति से ज्ञात हो रहा है कि बहन संतोष एक लोकप्रिय महिला थी। इन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए आप सब भारी संख्या में उपस्थित हैं। मेरा यह सुझाव है कि हम अपने बुजुर्गों को जीवित रहते हुए एक विशेष आयोजन प्रारम्भ करें जिससे उन्हें पता चले कि उनके शुभ चिन्तक कितनी बड़ी संख्या में हैं। उनका जीवित श्राद्ध करके हम लोग भी पुण्य के भागी बनेंगे। साथ ही स्वामी जी ने उपस्थित जन-समूह को जीवन में शाकाहार, सात्विकता एवं सामाजिकता आदि गुणों को धारण करने पर भी बल दिया। उन्होंने कहा कि आज हम सबके लिए प्रेरणा का दिन है। यद्यपि संतोष जी के देहावसान का हम सबको अत्यन्त कष्ट है लेकिन ईश्वरीय व्यवस्था के कारण हम सब लोग इसको स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं। किन्तु हमें दिवंगत बहन संतोष से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उन्नति की ओर ले जाने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने समस्त चौहान परिवार को सांत्वना देते हुए बहन जी के पद-चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर श्री विजयपाल शास्त्री ने भजनों के द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन श्री सोमदत्त शास्त्री जी ने किया। इस अवसर पर श्री बलवीर सिंह चौहान एडवोकेट, श्री रणवीर सिंह चौहान, राजकुमार गुप्ता, मेजर विजय आर्य, लक्ष्मण प्रसाद आर्य-पुरोहित आर्य समाज, सैक्टर-22, डॉ. सुरेन्द्र कुमार-पंजाब विश्वविद्यालय एवं आर्य समाज सैक्टर-22 के प्रधान आदि ने भी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रीमती संतोष चौहान की श्रद्धांजलि सभा में उमड़ा जन-सैलाब

thearyasamaj.org

संस्कारों का प्रभाव

– पं. माया प्रकाश त्यागी, कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा

जिसे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सके उसे संस्कार कहते हैं। संस्कारों का करना संतानों को योग्य होने के लिए उचित व आवश्यक है। इसमें महर्षि मनु का प्रमाण है –

निषेकादिश्मशानान्तो मन्त्रैर्यस्योदितो विधि – मनु. 2/16

मनुष्यों के शरीर और आत्मा के उत्तम होने के लिए निषेक अर्थात् गर्भादान से लेकर श्मशानान्त अर्थात् अन्त्येष्टि तक 16 संस्कार होते हैं। इन 16 संस्कारों के करने का वेदों में विधान है।

आयुर्वेद के विशेषज्ञ व शल्य चिकित्सा (सर्जरी) के आविष्कारक परम वैद्य सुश्रुत महाराज का कहना है कि शरीर की उन्नति की जैसी विधि वैद्यक शास्त्रों में है वैसी अन्यत्र नहीं। आयु के किस वर्ष में शरीर में कौन-कौन धातु पुष्ट होनी चाहिए अर्थात् कौन पदार्थ वृद्धि के हेतु है इसका विस्तृत विधान आयुर्वेद मे है, ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है।

गर्भादान आदि संस्कारों के करने में वैद्यक शास्त्रों का आश्रय विशेष सहायक होता है, किस समय में कौन से संस्कार में क्या आहार लेना है इसका दिग्दर्शन आयुर्वेद में सम्यक रूप से है।

जो अपने कुल की उत्तमता के लिए सन्तानों को दीर्घायु, सुशील, बलपराक्रमयुक्त, विद्वान और श्रीमान बनाना चाहें वे सभी संस्कारों को नियत समय पर अवश्य कराये। यही सब सुधारों का सुधार सब सौभाग्यों का सौभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला कर्म है।

उत्तम सन्तान बनाने हेतु माता-पिता का शुद्ध सात्विक व पौष्टिक आहार लेना मुख्य, आधार होता है। इसमें छांदोग्य उपनिषद का यह वचन प्रेरणादायक है –

आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति।

– छा. 7/26/2

अर्थात् शुद्ध आहार जो दूध, घृत, अन्न, फल आदि सात्विक पदार्थ है उनके सेवन से शरीर की वृद्धि व अन्तःकरण की शुद्धि तथा कुशाग्र बुद्धि की प्राप्ति होती है। आहार के अतिरिक्त व्यक्ति के पठन-पाठन, द्रश्यावलोकन, श्रवण-मनन व आचरण के सात्विक होने से सन्तानों तथा अन्यों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है और सभी अच्छे संस्कारों से भर जाते हैं।

इस प्रकार से देखा जाये तो संस्कार का अर्थ है निर्माण। रामायण में कथा है किस प्रकार श्रृंगी ऋषि ने राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टियज्ञ संस्कार कराकर सन्तान उत्पन्न कराये थे तथा माता कौशल्या ने तप करके मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम जैसे पुत्र को जन्म दिया। इसी प्रकार की कथा महाभारत में अभिमन्यु से सम्बन्धित है, कि माता के गर्भ में ही उसने रणकौशल के संस्कार प्राप्त कर लिए थे। उपनिषदों में अनेक ऐसी कथाएं भरी पड़ी हैं – "शुद्धोऽसि बुद्धौऽसि अमृतोऽसि" की लोरी सुनाकर माता ने अपने पुत्रों को जन्म से ही वैराग्यवान बना दिया था।

नामकरण संस्कार के माध्यम से बालक पर यह प्रभाव पड़ता है कि वह अपने नाम को सार्थक करने के प्रयास में लग जाता है ऋषि दयानन्द का निर्देश है कि नाम सुन्दर व सार्थक ही रखना चाहिए।

विवाह संस्कार में वर-वधू जब मंत्रोचारण के माध्यम से प्रतिज्ञा करते हैं तो उन्हें यह संस्कार मिलता है कि हम परस्पर मिलकर गृहस्थ आश्रम को सफल व सुखद बनाये।

इसी प्रकार सभी 16 संस्कारों का सन्तानों पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है वे हर प्रकार से समुन्नत होकर अपने कुल का नाम रोशन करते हैं।

– 9/242, राजनगर गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

वैदिक योग संन्यास आश्रम, सोमधाम खेड़ला, जिला–गुड़गांव में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज के तेजस्वी, तपस्वी युवा संन्यासी स्वामी विजयवेश जी के संयोजन में गत 19 से 21 सितम्बर तक वैदिक योग संन्यास आश्रम सोमधाम, खेड़ला में सामवेद पारायण यज्ञ का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस यज्ञ में स्वामी चन्द्रदेव जी ब्रह्मा के पद पर सुशोभित थे। 20 सितम्बर को प्रातःकाल के कार्यक्रम में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य सन्तराम जी के साथ सम्मिलित हुए और अपने एक घण्टे के धारा प्रवाह प्रवचन में उन्होंने यज्ञ के व्यापक अर्थ पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने यज्ञ को परोपकार का सबसे उत्तम साधन बताते हुए उपस्थित जन-समूह को प्रेरित किया कि वे अपने जीवन में पहले अन्य व्यक्तियों के प्रति अहिंसा, सत्य, अस्तेय एवं अपरिग्रह आदि को धारण करके पहले अपने आपको सुधारें और अन्यों के प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार को आत्मसात करें। स्वामी जी ने कहा कि जो व्यक्ति मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा का मार्ग अपनायेगा उसे अध्यात्म मार्ग पर चलने में विशेष आन्नद भी आयेगा और प्रगति भी होगी। स्वामी जी ने कहा कि देवयज्ञ से जिस प्रकार वायुमण्डल शुद्ध होता है उसी प्रकार अपने जीवन में परोपकार के कार्य करते हुए अपने जीवन को शुद्ध और सात्विक बनाने का प्रयास करते रहना चाहिए। स्वामी जी ने स्वामी विजयवेश जी, साध्वी मुक्तानन्दा मन्त्री एवं श्रीमती रेखा चौधरी की प्रशस्ति करते हुए इस सफल आयोजन की प्रशंसा की।

इस अवसर पर युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी शोभानन्दा, पं. बुद्धराम आचार्य, स्वामी राजेश्वरानन्द, स्वामी देवेश्वरानन्द, श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री महेश कुमार आर्य-सोहना, श्री सुभाष मुगलानी, श्री हरवंश-सदरपुर, श्री मस्तराम, श्री दिनेश आर्या, श्री प्रकाशवीर, श्री खेमचन्द आर्य आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या तथा प्रवेश आर्या, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी, राजस्थान के सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती आदि विशेष रूप से सम्मिलित थे। कार्यक्रम अत्यन्त सफलता के साथ प्रीतिभोज के साथ सम्पन्न हुआ।

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज शक्तिनगर में तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

स्वामी आर्यवेश जी के वेद प्रवचनों की धूम

दिल्ली की प्रसिद्ध आर्य समाज शक्तिनगर जो साही अर्थों में शक्ति का केन्द्र रही है। इसी आर्य समाज के माध्यम से सन् 1983 में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का भव्य आयोजन दिल्ली रामलीला मैदान में हुआ था। 1986 में पूर्ण कुम्भ मेला हरिद्वार में विशाल वेद प्रचार शिविर चतुर्वेद पारायण महायज्ञ तथा पाखण्ड-खण्डिनी पताका फहराकर शास्त्रार्थ का आह्वान किया गया था। उड़ीसा में समय-समय पर आदिवासी क्षेत्रों के छात्र-छात्राओं को आर्थिक सहायता एवं निर्धन लोगों को वस्त्र एवं भोजन सामग्री देकर उन्हें आर्य समाज की विचारधारा से जोड़ने का काम किया था। और इसी प्रकार समाज में संस्कृत की उच्च शिक्षा हेतु दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रवेश करने वाले गुरुकुलों के छात्रों को भोजन एवं आवास की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध कराकर तथा समाज में आने वाले समस्त संन्यासियों, उपदेशकों एवं अन्य अतिथियों के लिए स्थाई ऋषि लंगर की व्यवस्था करके एक कीर्तिमान स्थापित किया। वर्तमान में भी यह आर्य समाज पूर्व की भांति अपने सेवा प्रकल्पों को निरन्तर चला रही है तथा प्रगति पथ पर अग्रसर है। आर्य समाज के वार्षिक कार्यक्रम में गत दिनों 19 से 21 सितम्बर, 2014 तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के वेद प्रवचनों की विशेष धूम रही। इस अवसर पर स्वामी जी को सुनने के लिए विभिन्न आर्य समाजों के सदस्य तथा स्थानीय लोग भारी संख्या में उमड़े। स्वामी जी ने अपने प्रवचनों के माध्यम से मनुष्य जीवन की सार्थकता के लिए जहां ईश्वर भक्ति के माध्यम से अपनी आध्यात्मिक उन्नति करने पर बल दिया वहीं सामाजिक उन्नति के लिए परोपकार, सेवा एवं सहयोग की भावना आत्मसात करने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने व्यक्तिगत जीवन में शारीरिक उन्नति हेतु वर्तमान में चल रहे अभक्ष्य खान-पान, प्रदूषित जलवायु, अश्लीलता एवं अपसंस्कृति आदि से बचने एवं जीवन में शुद्ध सात्विक खान-पान, सात्विक विचार एवं सामाजिक सौहार्द पर बल दिया। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शिवपाल आर्य के ओजस्वी गीतों ने समा बांध दिया। प्रतिदिन प्रातःकाल सामवेद पारायण यज्ञ आर्य समाज के धर्माचार्य तथा आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में चलता रहा। जिसकी पूर्णहुति 21 सितम्बर, 2014 को प्रातः 9 बजे सम्पन्न हुई। पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने सभी यजमान परिवारों को आशीर्वाद देकर उनके जीवन में हर प्रकार से मंगल आचरण की कामना की। कार्यक्रम के दौरान स्वामी आर्यवेश जी का सार्वदेशिक सभा का प्रधान चुने जाने पर भव्य स्वागत किया गया। आर्य समाज शक्तिनगर के प्रधान श्री नरेन्द्र गुप्ता, डॉ. वत्स शास्त्री-मन्त्री, श्री सुधीर घई, श्री भूदेव आर्य, आर्य समाज आर्य पुरा के प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, आर्य स्त्री समाज की प्रधाना श्रीमती रश्मि, मंत्राणी श्रीमती कांतावाली, कोषाध्यक्षा श्रीमती शीला शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधाना शालिनी गुप्ता, श्री कंवर पाल शास्त्री, श्री राजेन्द्र गुप्ता-उपप्रधान आदि ने माल्यार्पण कर स्वामी जी का स्वागत किया। भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री वीरेन्द्र गुप्ता जी ने संभाली। उक्त तीन दिवसीय कार्यक्रम विशेष उत्साह के साथ प्रीतिभोज के साथ सम्पन्न हुआ।

शहीद परिवारों ने महर्षि दयानन्द को याद किया

शहीद स्मृति चेतना समिति की ओर से भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के गुमनाम शहीदों की स्मृति में आचार्या सुमेधा, व वनवासी कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राओं ने "वैदिक यज्ञ" करके महाश्राद्ध किया। यह कार्यक्रम हरियाणा मैत्री भवन, रानी बाग, दिल्ली में 23 सितम्बर, 2014 को आयोजित किया गया।

शहीद भगत सिंह के भतीजे किरण जीत सिंह संधु ने कहा मेरे दादा सरदार अर्जुन सिंह, चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह महर्षि दयानन्द को स्वतंत्रता संग्राम का पथ-प्रदर्शक मानते थे वे उसी राह पर चले। अशफाक उल्ला खां के पौत्र अशफाक ने कहा राम प्रसाद बिस्मिल व अशफाक आर्य समाज में बैठकर खाना खाते व देश की आजादी की योजना बनाते थे। शहीद ऊधम सिंह के भतीजे 102 वर्षी खुशीनन्द के प्रपौत्र हरपाल जो पंजाब विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं का मानना है कि अमर देशभक्तों का जीवन पाठ्यक्रम में शामिल हो। सुखदेव के वंशज अनुज थापर का आक्रोश है कि सुभाष चन्द्र बोस व देशभक्तों को उचित सम्मान नहीं मिला, इसके लिए उद्यम करने की आवश्यकता है। तात्याटोपे के वंशज डॉ. राजेश टोपे ने कहा अंग्रेज सरकार ने हमारा इतिहास तोड़-मरोड़ कर युवा पीढ़ी को भ्रमित किया है। 1857 के शहीद दुर्गा सिंह के वंशज विजय सिसौदिया ने कहा 1857 से लेकर 1947 तक देश को आजाद कराने वाले वीरों की याद में "राष्ट्रीय स्मारक" बनाना चाहिए तो 13 दिसमबर, 2001 को संसद में उपराष्ट्रपति कृष्णकान्त की सुरक्षा करने वाले शहीद ओम प्रकाश डबास के वयोवृद्ध 84 वर्षीय पिता सरदार सिंह ने कहा मेरा बेटा आतंकवादियों से लड़ते, सीने पर छः गोलियां खाकर शहीद हुआ, मुझे इस पर गर्व है।

संस्थापक व साहित्यकार रविचन्द्र गुप्ता ने भारत सरकार से मांग की, अमर शहीदों का जीवन चरित्र विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम में शामिल करें, क्योंकि युवा पीढ़ी दिशाहीन हो रही है। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की साधवी सत्या सिद्धा ने भी युवा पीढ़ी को शहीदों की गाथाओं से संस्कारित करने पर बल दिया।

इस अवसर पर "सलाम इन शहीदों को" नाटिका का प्रस्तुतिकरण वीरेन्द्र चन्द्र सखी व टी. आर. चावला द्वारा किया गया। कलाकारों का प्रदर्शन इतना सार्थक था कि दर्शकों की आंखों में आंसू उमड़ पड़े। सेठ राम निवास गुप्ता, प्रेम कुमार शुक्ल के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा। देवीदत्त सजल ने मंच संचालन कुशलता पूर्वक किया।

- चन्द्रमोहन आर्य-प्रेस सचिव

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय (स्वामी योगानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित) गंगीरी (अलीगढ़) का 57वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

इस गुरुकुल की स्थापना वर्ष 1953 में तटनीम नदी के निकट स्वामी योगानन्द सरस्वती जी ने की अलीगढ कासगंज मार्ग पर गांव-गंगीरी के पास सड़क मार्ग से 1 किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण दिशा में स्थित है।

गुरुकुल में विशाल 40 बाई 40 फीट यज्ञशाला के अतिरिक्त अतिथिगृह, छात्रावास, पाठशाला और गौशाला स्थापित है। गुरुकुल में 40 ब्रह्मचारी 4 आचार्यों के सान्निध्य में आर्ष पद्धति से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

गुरुकुल का 57वाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 11 से 13 अक्टूबर, 2014 को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। तीनों दिन प्रातःकाल यजुर्वेद के मन्त्रों से बृहत यज्ञ का आयोजन हुआ। तदोपरान्त 10 से 12, 2 से 5 और रात्रि में 8 से 10 बजे तक भजन और वैदिक प्रवचनों से वैदिक ज्ञान का प्रसार किया गया।

आर्य विद्वानों में मुख्य रूप से स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती (सार्वदेशिक सभा, दिल्ली) स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (दिल्ली), आचार्य बृजेश (गोवर्धनपुर), श्री शिवराज शास्त्री (कनकपुर), आचार्य राम प्रकाश वर्णी (एटा) के सारगर्भित प्रवचन हुए और श्री रमेश चन्द्र आर्य (पूर्व चेयरमैन हाथरस), श्री कप्तान सिंह आर्य (खुलावली) श्री प्रकाश मुनि व श्री बाबू लाल आर्य के भजनों ने उपस्थित जन समूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। श्री पं. देशराज सत्येषु (भरतपुर) की वेद कथा भी प्रशंसनीय रही।

उत्सव की अवधि में भोजन व आवास का प्रबन्ध मुख्य अधिष्ठता, स्वामी उद्गीथानन्द सरस्वती और शान्त मुनि की देखरेख में उत्तम रहा।

12 तारीख को स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने श्री अविनाश चन्द्र गुप्ता (विजयगढ़, अलीगढ़) और श्री चन्द्रप्रकाश साहू (कासगंज) को वानप्रस्थ आश्रम की वैदिक विधि से दीक्षा प्रदान की और वानप्रस्थी के रूप में उनके नाम क्रमशः अविनाश मुनि और चन्द्रमुनि घोषित किये। तदोपरान्त श्री शान्तमुनि (अधिष्ठाता, गुरुकुल गंगीरी) को संन्यास आश्रम की दीक्षा वैदिक पद्धति से प्रदान की और उनका संन्यासी रूप में नाम स्वामी शान्तानन्द घोषित किया तदोपरान्त स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती, स्वामी महानन्द सरस्वती और श्री विचार मुनि (गोमत) ने नवीन दीक्षित वानप्रस्थियों और संन्यासियों को आश्रम आधाारित कर्म व धर्म के विषय में अपने प्रवचनों से ज्ञान कराया और स्वाध्याय में निरन्तर प्रवृत्त रहने को कहा। शन्तिपाठ के उपरान्त उत्सव सम्पन्न हुआ।

- पीताम्बर दत्त शास्त्री,
मंत्री/प्रबन्धक, गुरुकुल, गंगीरी ,
अलीगढ़ (उ. प्र.)

गुरुकुल यमुनातट मंझावली जिला-फरीदाबाद (हरियाणा) में
चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर

गुरुकुल यमुनातट मंझावली फरीदाबाद में 21वें वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष्य में "सवा करोड़ गायत्री तथा चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं योगसाधना शिविर" का आयोजन धर्ममेघ समाधि से अलंकृत श्रद्धेय श्री स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में शनिवार 4 अक्टूबर, 2014 से रविवार 8 मार्च, 2015 तक विशिष्ट आयोजनों के साथ सम्पन्न होगा.

इस आयोजन में भाग लेने वाले याज्ञिक एवं साधक महानुभावों से नम्र निवेदन है कि अपने साथ भारतीय वेशभूषा परिधान के रूप में लावें, पुरुष वर्ग धोती कुर्ता तथा महिलायें साड़ी (शाटिका) अपने साथ लावें, यदि पीत वस्त्र हों तो उत्तम होगा तथा अपने साथ ओढ़ने बिछाने के वस्त्र एवं चाकू, टार्च, नोटबुक, लेखनी और सत्यार्थप्रकाश साथ में अवश्य लावें.

शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव कम से कम सात दिन का अवसर निकाल कर अवश्य पधारें, इसके लिए शुद्ध शाकाहारी सात्विक आहारसेवी होना आवश्यक है. अण्डा, मांस, शराब, धूम्रपान आदि से ग्रस्त व्यक्ति भाग नहीं ले सकेंगे, परन्तु इन व्यवसनों को सदा के लिए छोड़ने का व्रत लेने वाले जनेऊधारी व्यक्ति भाग ले सकेंगे. शिविरार्थियों को निर्धारित दैनिक दिनचर्या में रहना भी आवश्यक होगा. शिविरार्थियों पर कोई शुल्क निर्धारित नहीं है, तथा जो साधक शिविरार्थी अपने सामर्थ्यानुसार जितना उचित समझें सहयोग कर सकते हैं.

- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, मो.:-9868855155

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-110001 On 24–25 अक्टूबर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 25 अक्टूबर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
23 से 29 अक्टूबर 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

मुझे आश्रय दो

य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन् त्वां आगांसि कृणवत्सखा ते।
मा त एनस्वन्तो यक्षिन् भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम्।।

—ऋ० ७/८८/६

ऋषिः—वसिष्ठः।। देवता—वरुणः।। छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्।।

विनय—हे जगदीश्वर ! यह जीव तुम्हारा सनातन बन्धु है, यह तुमसे पृथक नहीं हो सकता। जीव चाहे कितना पतित हो जाए, वास्तव में तो यह स्वरूपतः चेतन आत्मा ही है। इस जीवात्मा में तुम सदा स्वामी (संचालक) होकर व्याप्त हो और तुममें यह जीव–आत्मा सदा आश्रित है। एवं, जीव सदा तुम्हें प्राप्त तुम्हारा 'आपिः' है, सदा तुमसे बंधा हुआ तुम्हारा बन्धु है, तुम्हारा सखा है। यह तुम्हारा साथी तुम्हें इतना प्रिय भी है कि तुमने स्वयं कुछ न भोगते हुए भी इस जीव के भोग के लिए ऐश्वर्यों से भरा यह सब संसार खोलकर रख दिया है, परन्तु फिर भी यह जीव–यह तुम्हारा ऐसा प्यारा सखा जीव इस संसार में तुम्हारे प्रति अपराध करता रहता है, तुम्हारे नियमों का भंग कर तुम्हें अप्रसन्न करता रहता है।

हे यजनीय देव ! हम जीवों को इस प्रकार तुम्हारे प्रति अपराधी होने पर क्या करना चाहिए?हमें यह चाहिए कि हम पापी होने पर तुम्हारे दिये गये भोगों को त्याग दिया करें। हे यक्षिन् ! पाप करते ही हमारे द्वारा तुम्हारे यज्ञ का भंग हो जाता है और मनुष्य को बिना यज्ञ किये भोग भोगने का अधिकार नहीं है, अतः पापी होकर हमें भोग–त्याग कर देना चाहिए, किसी भोग के त्याग के रूप में उस पाप का प्रायश्चित कर लेना चाहिए। पापी होने पर भोग कभी न करें– ऐसा करने से हमें तुम एक 'वरूथ' अर्थात् सुरक्षित घर वा आश्रय दे देते हो। हे जगदीश्वर ! तुम सर्वज्ञ हो, मेरे हृदय को जानते हो, मुझ अपने उपासक के सब सच्चे भावों को जानते हो, अतः अब जब कभी मुझसे तुम्हारे किसी नियम का भंग होगा तो मैं किसी भोग के त्यागने के द्वारा तेरी शरण में आने के लिए अपने हाथ फैलाऊँगा। हे विप्र ! हे स्वामिन् ! तब मुझे अपना 'वरूथ' अवश्य प्रदान कीजिएगा, हाथ फैलाये हुए मुझे अपनी गोद में स्थान देकर सुरक्षित कीजिएगा, कुछ समय के लिए अपने घर में मुझे आश्रय दीजिएगा, जिससे पवित्र होकर आगे के लिए मैं वैसा नियम भंग करने से अलग रहूँ।

शब्दार्थ—वरुण=हे वरुण ! **यः नित्यः आपिः**=जो तेरा सनातन बन्धु है वह **ते सखा**=तेरा साथी **प्रियः सन्**=तेरा प्यारा होता हुआ भी **त्वां आगांसि कृण्वत्**=तेरे प्रति पाप, अपराध किया करता है। **यक्षिन्**=हे यजनीय देव ! **एनस्वन्तः**=पापी होते हुए हम **ते मा भुजेम**=तेरे दिये भोग न भोगें **विप्रः स्तुवते वरूथं यन्धि स्म**=इस प्रकार तुम सर्वज्ञ मुझ उपासक को अपनी शरण या घर दे दो।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय
वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

31 अक्टूबर, 2014 तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।